THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

"आधुनिक भारतीय समाज को पारम्परिक व्यवसायों से जोडती गांधीजी की नई तालीम का अध्ययन"

डॉ0 प्रशान्त कुमार
प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
शोभित विश्वविद्यालय गंगोह
सहारनपुर (उ0प्र0)
prashant.kumar@shobhituniversity.ac.in
9639480428

विकास कुमार
शोधार्थी, शिक्षा विभाग
शोभित विश्वविद्यालय गंगोह
सहारनपुर (उ0प्र0)
pvikash1983@gmail.com
9758054560

शोध सारांश :– *प्रस्तुत शोधपत्र का उददेश्य महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों की सामाजिक उपयोगिता का विश्लेषण करना है साथ ही उनके विकास योजना मॉडल का क्रियान्वयन कर सभ्य समाज एवं चरित्रवान नागरिक का निर्माण करना है। वर्धा योजना में गांधीजी ने प्रथम सात वर्षों की शिक्षा की निशुल्क एवं अनिवार्य किये जाने पर बल दिया था। आधुनिक भारत के निर्माण में महात्मा गांधी का बहुआयामी योगदान रहा है। गांधीजी की शिक्षा सम्बंधी विचारधारा उनके नैतिकता तथा स्वावलंबन सिद्धान्तो पर आधारित थी।गांधीजी भारत के उन महापुरूषों में से एक है जिन्होने भारत की शैक्षिक व्यवस्था का अध्ययन किया तथा इससे जुडी समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की। गांधीजी स्वयं में एक सुधारवादी राजनीतिक विचारक थे। उनकी दृढ मान्यता थी कि भारत में शिक्षा सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन और विकास के माध्यम से अपने को प्रतिबिम्बित करती है। इस रूप में यह आवश्यक है कि एक ओर तो जीवन के भौतिक संसाधनो में अत्यधिक रूचि को दूर किया जाये तो दूसरी ओर जीवन के आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति जनमानस में आस्था को राष्ट्रीय धरातल पर विकसित किया जाये। एक ऐसे समय में जब परिवर्तन की गति तेज है तो यह आवश्यक होगा कि शिक्षा के माध्यम से समाज की चुनौतियों का सामना करने के लिए रणनीति तय की जाये। गांधीजी जीवन पर्यन्त, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना के लिए संघर्ष करते रहे।गांधीजी एक शिक्षाशास्त्री नही थे क्योंकि उन्होनें शिक्षाशास्त्र के सिद्धान्तों की विवेचना नही की परन्तु अपने सामाजिक वक्तव्यों के दौरान वे समय–समय पर शिक्षा के विभिन्न पक्षों पर अपने विचार रखते रहे। नई तालीम के सम्बंध में उनके विचार आज भी प्रासंगिक है। आज भारत के ग्रामवासियों के जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए उनको आत्मनिर्भर बनाना जरूरी है इसके लिए उन्हे श्रम आधारित शिक्षा की जरूरत है जिसकी पूर्ति गांधीजी की बुनियादी शिक्षा योजना के द्वारा सम्भव है। आधुनिक भारतीय समाज की एक प्रमुख समस्या है जीवन आधारित शिक्षा का अर्थात, यद्यपि सैद्धांतिक रूप में यह स्वीकार किया गया है कि शिक्षा व्यवसायोन्मुखी होनी चाहिए परन्तु व्यवहार में आज भी शिक्षा जीवन उपयोगी न होकर सैद्धान्तिक विषयों पर आधारित है। फलतः शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी व्यक्ति उसका उपयोग अपने वास्तविक जीवन में नही कर पाता है। आज जरूरत है सब लोग, संस्थाएं इस दिशा में मिलकर कार्य करे व एक लक्ष्य तय करें। हाथ से कार्य करने की महत्ता को न कभी नकारा गया और न भविष्य में नकारे जाने की सम्भावना दिखाई पडती है। ऐसे में हमें चाहिए की शिक्षा को कार्य से अलग करके नही देखें। शिक्षा में सार्थक व्यवसायिक शिक्षा एवं श्रम का समावेश हो। कार्य क्षेत्रो का विस्तार होने के कारण शिक्षा को सभी व्यवसायों से जोडना कठिन अवश्य जान पडता है परन्तु तकनीकी विकास के चलते यहा असम्भव नही है। आज आवश्यकता है कि शिक्षा के क्षत्र मे सभी लोग (प्रशासनिक व अकादमिक) एक साथ मिले एक लक्ष्य तय करें व एक कार्य योजना बनाएं। सब स्वयं जिम्मेदारी तय करें व उसे पूरा करें।*

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

प्रस्तावनाः– गांधीजी ने देश के नागरिकों में नव–चेतना, नवजागरण एवं नव–शक्ति का विकास करके राष्ट्र का पुनर्निर्माण किया। वे अपने जीवन काल में न केवल सत्य एवं अहिंसा के पुजारी बने रहे अपितु एक सफल राजनेता, समाज–सुधारक एवं शिक्षाविद् भी रहे। उन्होने केवल राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक जीवन को ही प्रभावित नही किया अपितु शिक्षा के क्षेत्र में भी उन्होने अपनी विशेष छाप छोडी। गांधीजी के हर क्षेत्र की कार्य प्रणाली उनके जीवन दर्शन का प्रतिनिधित्व करती है। उन्होने भारतीय संस्कृति को सुरक्षित रखने एवंजनसाधारण को आत्म–निर्भर बनाने हेतु राष्ट्रीय बुनियादी शिक्षा योजना को भी प्रस्तुत किया। गांधीजी की मान्यता थी कि शिक्षा सैद्धान्तिक एवं दार्शनिक रूप मे ही महत्वपूर्ण नही वरन् व्यावहारिक रूप से भी महत्वपूर्ण है। इस संदर्भ में उनका शिक्षा दर्शन भी उनके जीवन दर्शन का एक प्रतीक है। बात चाहे सत्य की हो या अहिंसा की मूल्यों की हो या संस्कारिता की विश्व शांति की हो या मानवधिकारों की सभी क्षेत्रो में गांधीजी की शिक्षा से सम्बंधित अवधारणा अपना एक विशेष महत्व रखती है। आज भारतीय समाज में मुख्य रूप से शिक्षित लोगो में शारीरिक श्रम के प्रति हीनता की भावना पैदा होने लगी है। यह वर्तमान शिक्षा प्रणाली का एक बडा दोष है। भारत जैसे देश में जहाँ पर मानव श्रम बहुत बडी मात्रा में उपलब्ध है वहाँ श्रम की अवहेलना करना देश की आर्थिक उन्नति में बाधक है। महात्मा गांधी ने शिक्षा के क्षेत्र में इसी कमी को पहचाना और श्रम को प्रतिष्ठित कर शिक्षा को उत्पादकता से जोडने का प्रयास किया। गांधीजी के अनुसार शिक्षा ऐसी हो जो व्यक्ति की आजीविका कमाने में उसकी सहायता करे और इसको श्रम करने के लिए प्रोत्साहित करे, क्योंकि श्रम हर उन्नति का आधार है। आधुनिक भारतीय समाज में बेरोजगारी की समस्या एक बहुत बडी समस्या है। इस समस्या का समाधान गांधीजी की आधारतभूत या बेसिक शिक्षा के द्वारा किया जा सकता है। इस प्रणाली में हस्त उद्योग द्वारा शिक्षा प्राप्तकरने पर बल दिया गया है। हस्त उद्योगों के अन्तर्गत गांधीजी ने कपास, रेशम की बुनाई से लेकर सफाई, रंगाई, मांड लगाना, ताना लगाना, बुनाई कसीदा काढना, सिलाई आदि तमाम क्रियाएं कागज बनाना, कागज काटना, जिल्द साजी, आलमारी, फ्रर्नीचर वगैरह तैयार करना, खिलौने बनाना, गुड बनाना इत्यादि उद्योगों को शामिल किया जिन्हे आसानी से सीखा जा सकता है और जिनको करने के लिए बडी पूंजी की भी आवश्यकता नही होती। गांधीजी ने बेरोजगारी मुख्य रूप से शिक्षित बेरोजगारी के विषय में चिंता व्यक्त करते हुए नई तालीम (बुनियादी शिक्षा) के द्वारा इस समस्या के हल करने की बात कही है। गांधीजी के शब्दो में मेरा यह विश्वास है कि हमारे कालेजों में जो इतनी भारी तथा कथित शिक्षा दी जाती है वह सब बिल्कुल व्यर्थ है और उसका परिणाम शिक्षित वर्गो की बेकारी के रूप में हमारे सामने आया है। आज युनिवर्सिटी से शिक्षा प्राप्त हमारे नौजवान सरकारी नौकरियों के पीछे मारे–मारे फिरते हैं। लोगो के सामने हाथ फैलाने या उनके टुकडों के मोहताज बनने मे भी वे शर्म महसूस नही करते। उनकी दुर्दशा की भी कोई हद नही है। आज विश्वविद्यालयों को चाहिए किवे देश के लिए जीने और मरने वाले जनता के सेवक तैयार करे। इसलिए मेरी राय है कि तालीमी संघ के शिक्षकों की मदद् से युनिवर्सिटी शिक्षा को नई तालीम (बुनियादी या बेसिक शिक्षा) के साथ जोडकर उसकी लाइन में आना चाहिए वर्तमान भारतीय समाज में मात्रभाषा का महत्व घटता जा रहा है। आज भी अधिकांश शिक्षण संस्थाओ में बालक को प्रारम्भ से ही अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दी जाती है। मातृ भाषा और राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रयोग घटता जा रहा है। विदेशी माध्यम ने हमारी देशी भाषाओं के विकास को रोक

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

दिया है। विदेशी माध्यम के दुष्प्रभाव को बताते हुए गांधीजी ने कहा था कि इससे हमारे विद्यार्थी दिमागी थकावट के शिकार हुए है। उनके ज्ञान तन्तुओं पर अनुचित भार पडा है। वे रटटु और नकलची बन गये है और अपनी विद्या को परिवार अथवा जन साधारण तक पहुंचाने में असमर्थ हो गये है। वर्तमान शिक्षा पद्धति का यह सबसे दुःखद परिणाम है। गांधीजी ने विदेशी भाषा के माध्यम को एक अभिशाप बताया। आज आवश्यकता इस बात की है कि अंतर्राष्ट्रीय भाषा अंग्रेजी के साथ–साथ हमारी प्रान्तीय भाषाओं और राष्ट्रभाषा हिन्दी का अधिकतम प्रयोग करके उनका विकास किया जाना चाहिए। ताकि इन भाषाओं को समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त हो और हमारी सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखा जाए। शिक्षा को जन साधारण तक पहुँचाने के लिए शिक्षा का माध्यम मात्रभाषाओं को बनाया जाना चाहिए, बुनियादी शिक्षा योजना के अंतर्गत मात्रभाषा के माध्यम से शिक्षा देने का प्रस्ताव रखा गया है। मातृभाषा के महत्व को स्पष्ट करते हुए गांधीजी ने लिखा है कि मेरी मातृभाषा में कितनी ही खामियाँ क्यो न हो, मै उससे उसी तरह चिपटा रहूंगा जैसे अपनी माँ की छाती से। वही मुझे जीवन देने वाला दूध दे सकती है। मै अंग्रेजी को उसकी जगह पर तैयार करता हू लेकिन अगर वह उस जगह को हडपना चाहती है जिसकी वह अधिकारिणी नही है तो में उसका कडा विरोध करूंगा। यह बात मानते है कि अंग्रेजी आज सारी दुनिया की भाषा बन गई है। इसलिए मैं उसे दूसरी भाषा के रूप में स्थान दूंगा लेकिन युनिवर्सिटी के पाठ्यक्रम में व स्कूलों में नही। वह कुछ लोगो के सीखने की चीज हो सकती है। लाखों करोडो की नही।

आज बहुत ही जरूरी हो गया है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली को स्वावलम्बी बनाया जाये। गांधीजी के अनुसार स्वावलम्बन मेरे लिए नई तालीम की पहली शर्त नही बल्कि उसकी सच्ची कसोटी है। स्वावलम्बन के बिना नई तालीम वैसी ही मानी जायेगी जैसे बिना प्राण का शरीर। अक्षर ज्ञान हाथ की शिक्षा के बाद आना चाहिए, हाथ से काम करने की क्षमता हस्तकौशल ही वह चीज हैं, जो मनुष्य को पशु से अलग करती है। स्पष्ट है कि शिक्षा को शिल्प अथवा उद्योग पर आधारित करके बेरोजगारी और निर्धनता जैसी समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

हमारे देश के समूचे शिक्षा तंत्र पर दृष्टिपात करें तो यकीनन इसने बुद्धि पक्ष के विकास हेतु पूर्ण प्रयास किये लेकिन मानवीय पक्ष के विकास में जरूर पिछडापन रहा है। महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तुत शिक्षा प्रणाली ने जहाँ सार्वभौमिक विकास को महत्ता प्रदान की है वही शिक्षार्थी के एकांकी विकास का पूरा ध्यान रखा गया है।

बुनियादी शिक्षा के पाठ्यक्रम में उधोग को केन्द्रित विषय इसीलिए माना गया है कि इसमें अनेक शैक्षिक सम्भावनाएं निहित हैं। उद्योग से समावय कर अन्य विषयों का ज्ञान देने पर बल दिया गया है। किन्तु बाद में उद्योग के अतिरिक्त विद्यार्थी के प्राकृतिक एवं सामाजिक वातावरण से अन्य विषयों का समावय किया जाना स्वीकार किया है। केन्द्रिय विषय समावय करने के अतिरिक्त विद्यार्थी को करके सीखने (Learing by doing) तथा वैज्ञानिक आधार पर वस्तुओं एवं प्रक्रियाओं के क्यों और कैसे कैसे पक्षों को समझने के अवसर देता है।

मातृभाषा के माध्यम से बालक में लिखित एवं मौखिक अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित होती है। उसकी सामाजिक कार्य कुशलता बढ़ाने की दृष्टि से ही यह सर्वथा उचित है। सामाजिक अध्ययन द्वारा बालक मानव की प्रगति देश की सभ्यता व संस्कृति तथा अपने प्राकृतिक एवं सामाजिक वातावरण को समझने एवं उसमे अपना योगदान करने की प्रेरणा प्राप्त करता है। सामान्य विज्ञान

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

प्रकृति अध्ययन प्रयोग द्वारा अनुभव प्राप्त करने तथा मानव जीवन में शिक्षा की उपयोगिता समझने के अवसर प्रदान करता है।

बुनियादी शिक्षा उद्योग या क्रियाकलाप केन्द्रित शिक्षा है। यह शिक्षण विधि मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित है क्योंकि इसमें क्रिया द्वारा सीखने के सिद्धान्त निहित है तथा समाजशास्त्रीय दृष्टि से भी उपयुक्त है क्योंकि वह बालकों में श्रम के महत्व, समाज सेवा की अभिव्यक्ति, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा उत्पादन कार्य द्वारा स्वालम्बन की प्रवृति विकसित करती है।

नई तालीम शैक्षिक दृष्टि से अत्यन्त सुविचारित उपयुक्त योजना है। भारत की आर्थिक स्थिति को देखते हुए प्राथमिक शिक्षा को सार्वजनिक बनाने में सहायक सिद्ध हो सकती है। क्योंकि इसमे स्वालम्बन का सिद्धान्त निहित है।कोई भी शिक्षा प्रणाली तभी सफल हो सकती है जबकि उसमें नये प्रयोग व शोध होते रहे और नई परिस्थितियों का समावेश करके उसमे परिवर्तन किये जाते रहे। राष्ट्र का विकास शिक्षा से ही हो सकता है। इस सच्चाई से कोई आँखे नही मूंद सकता। लेकिन इसके लिए शिक्षा तभी सशक्त होगी जब इसका आधार दृढहो। बुनियादी शिक्षा की अवधारणा और इसके फैलाव के लिए जूझते हुए हमें यह समझ में आया है कि केवल स्कूली स्तर पर प्रयास करने से काम नही चलेगा। इस विचार को समग्ररूप से समझने और उस पर काम करने की जरूरत है। असल में जब तक बुनियादी शिक्षा को उद्योग की शिक्षा के रूप मे (एकांगी रूप) मे देखा जाता रहेगा और समझा जाता रहेगा तब तक गांधीवादी शिक्षा विचार को व्यापक रूप से जमीनी स्तर पर नही उतारा जा सकेगा। दूसरी ओर जब तक शिक्षा की पूरी व्यवस्था के साथ इस विचार को नही जोडा जायेगा तब तक यह विचार आज के शैक्षिक परिदृश्य मे केवल एक टापू के रूप में ही अवस्थित रहेगा। यदि इस विचार का सर्वव्यापीकरण करना है और इसे राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था मे लाना है तो हमें बुनियादी शिक्षा के सभी महत्वपूर्ण तत्त्वों जैसे पाठ्यक्रम, सामग्री, शिक्षक, प्रशिक्षण काम से ज्ञान का निर्माण (समावय) आदि जैसे कि इस विचार में निहित है का जब तक समग्र रूप से समझने की कोशिश नही की जायेगी तब तक इसका सर्वव्यापीकरण सम्भव नही हो सकेगा। दरअसल शिक्षा से वास्ता रखने वाली सभी कडियों को इसमें जोडना होगा। हर एक में कोई न कोई सृजन करने की क्षमता छिपी हुई है शिक्षा का उददेश्य इस सर्जनात्मकता का अविष्कार करना है उसे रूधना नही। सबको एक ही सांचे मे नही ढालना चाहिए। व्यक्तिगत रूप से ऐसा अवसर हर एक को मुहैया कराना चाहिए दूसरी ओर व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी भी है। समाज को नुकसान होता है। ऐसा उसका जीवन व्यवसाय, व्यापारिक गतिविधि नही होनी चाहिए। उसका भान भी शिक्षा के जरिये खडा करना होगा। मनुष्य प्रकृति का पुत्र है। प्रकृति उसकी माता है। उस माता को मारने वाली उसका शोषण करने वाली मनुष्य की जीवन शैली नही होनी चाहिए। हम देखते है कि आधुनिक शिक्षा के फलस्वरूप व्यक्ति, समाज और प्रकृति का शोषण करके सबको तबाह करके कुछ मुठ्ठी भर लोगों की सुख–सुविधा के लिए काम करता है। यह आधुनिक शिक्षा की देन है। गांधीजी उसको पलट देना चाहते थे। यह काम नई तालीम ही कर सकती है। जो नई चेतना का निर्माण करके एक नया मनुष्य तैयार कर सकती है। वह नया मनुष्य ही नया समाज निर्माण करेगा जिसमें सर्व का उदय होगा।

अध्ययन विधि– प्रस्तुत शोध अध्ययन में अनुसन्धान की विवरणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन –

गुप्ता, डॉ0 पुनिता (2022)–"एनईपी 2020 के संदर्भ में समकालीन समय में गांधीवादी बुनियादी शिक्षा की प्रासंगिकता को समझना"– इस शोधपत्र में बताया गया है कि बेसिक शिक्षा आत्म–निर्भरता और समानता के सिद्धान्त पर आधारित है। यह शिक्षा बालको में आत्म–निर्भरता और समानता की भावना विकसित करती है। गांधीजी ऐसी शिक्षा के विरूद्ध थे जो ग्रामीण युवकों को खींचकर शहरों की तरफ लाये। शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी यदि बालक स्वावलम्बी नही बन पाता तो वह शिक्षा व्यर्थ है। गांधीजी का विचार था कि गाँवो तक जिस शिक्षा को हमे पहुँचाना है वह स्वावलम्बी ही होनी चाहिए और उद्योग को केन्द्र में रखकर ही उसे स्वावलम्बी बना सकते है।

कुमार, डॉ0 नरेश (2021)–"विभिन्न संदर्भो में गांधीजी की शिक्षा से सम्बंधित अवधारणा का अध्ययन" इस शोधपत्र में बताया गया है कि गांधीजी का शिक्षा – दर्शन उनके जीवन दर्शन पर आधारित है। उनकी सत्य, अहिंसा, त्याग, निष्ठा एवं सहानुभूति आदि मानवीय गुणों मे श्रृद्धा थी और जीवन – पर्यन्त रही। नियमितता, अनुशासन एवं कर्त्तव्यपरायणता आदि मानवीय गुणों का जीवन में बहुत अधिक महत्व है। इन मानवीय मूल्यों को शिक्षा के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। शिक्षा के संदर्भ में गांधीजी ने इस बात पर बल दिया कि शिक्षा के द्वारा समाज कल्याण का कार्य किया जाना चाहिए तथा साथ ही यह समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का एक सशक्त साधन एवं माध्यम भी होनी चाहिए। उन्होंने शिक्षा के द्वारा एक जातिविहिन एवं वर्गविहिन समाज की कल्पना भी की। गांधीजी ने एक ऐसी शिक्षा पद्धति का प्रतिपादन किया जिसका प्रत्येक व्यक्ति की सांस्कृतिक एवं बौद्धिक उन्नति पर प्रभाव पडे।

सिंह, अनूप कुमार (2020)–"राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की नयी तालीम शिक्षा पद्धति का स्वरूप एवं शिक्षा दर्शन" इस शोध पत्र के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि गांधीजी का शिक्षा दर्शन मानवता की सेवा के रूप में कार्य करता है न जाति रंग धर्म या राष्ट्र पर। उन्होंने शक्ति एवं धन के विकेन्द्रीकरण के लिए ऐसे लोकतान्त्रिक समाज की कल्पना की जिससे कि भारत के प्रत्येक गांव में कम से कम एक विद्यालय जरूर हो। महात्मा गांधी का मानना था कि शिक्षा हमें अपने उद्योग धन्धो तथा व्यवसायों से दूर करे वह सच्ची शिक्षा नही है। वह शिक्षा को उत्पादकता से जोडना चाहते थे जिससे बालक में श्रम के प्रति निष्ठा एवं आत्म–निर्भरता का भाव पनप सके। गांधीजी ऐसी शिक्षा चाहते थे जिसका जीवन से जुडाव हो और जो जीवन की विभिन्न परिस्थितयों के साथ समायोजन करना सिखाए।

कुमारी, श्रीमति प्रीति (2018)–"नई तालीम के माध्यम से शिक्षा एक गांधीयन दृष्टिकोण की प्रासंगिकता"– इस शोधपत्र में बताया गया है कि बुनियादी शिक्षा बालकों में सामाजिक गुणों का विकास करती है जिससे उनमें एक दूसरे के प्रति प्रेम, सहयोग और सहानुभूति के भाव पैदा होता है। यह शिक्षा जाति समुदाय वर्ग आदि के भेद मिटाकर समाज की एकता पर बल देती है। गांधीजी का मानना था कि वर्गहीन समाज की स्थापना शिक्षा के बिना असम्भव है। गांधीजी का शिक्षा दर्शन जीवन केन्द्रित और दस्तकारी केन्द्रित शिक्षा पर बल देता है। इसमे सभी विषयों को किसी हस्तशिलप पर आधारित करके पढाया जाता है। शिक्षण के लिए उन्होने रचनात्मक विधि क्रियाविधि सहसम्बंध विधि तथा अनुकरण विधि अपनाने पर बल दिया।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

सिंह, सुरेश (2014)–"वर्तमान समय में गांधी शिक्षा–दर्शन की प्रासंगिकता" इस शोधपत्र के अध्ययन से पता चला कि महात्मा गांधी का शिक्षा–दर्शन उनके जीवन दर्शन पर आधारित है। उनका शिक्षा–दर्शन भारतीय आदर्शवाद और पाश्चात्य प्रयोजनवाद एवं प्रकृतिवाद का सम्मिश्रण है। गांधीजी नई तालीम व्यवसायिक शिक्षा की तरह बालक को किसी व्यवसाय के लिए तैयार करती है। इसमे बालक मस्तिष्क के बजाए हाथो से अधिक काम करता है। यह शिक्षा बालको को एक विशिष्ट कार्य के योग्य बनाती है। इसमे करके सीखना तथा अनुभव पर अधिक बल दिया जाता है। यह शिक्षा पूरे जीवन की शिक्षा है।

निष्कर्ष – यदि गांधीजी के शिक्षा–दर्शन का मुल्यांकन करे तो हम यह निःसंकोच कह सकते है कि आज के बदलते परिवेश में उनका शिक्षा–दर्शन अत्याधिक प्रासंगिक है। गांधीजी शिक्षा के सैद्धान्तिक पक्ष से कभी भी सहमत नही थे। इसीलिए उन्होने शिक्षा का गत्यात्मक रूप प्रस्तुत किया। वे शिक्षा के द्वारा एक सम्पूर्ण मानव के विकास की कल्पना करते थे। शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने महत्वपूर्ण स्थान इस बात को दिया कि शिक्षा को देश की विद्यमान आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक परिस्थितियों के अनुकूल होना चाहिए। गांधीजी ने एक ऐसी शिक्षा की परिकल्पना की जो समस्त भारतीयों को एकता के सूत्र में बांध सके। महात्मा गांधी की नई तालीम शिक्षा पद्धति को इस नये समाज की जरूरतों के अनुसार उसे नये तरीके से लागू करने की आवश्यकता है। यह शिक्षा पद्धति स्वावलम्बन के सिद्धान्त पर आधारित है यह शिक्षा को व्यवसाय से जोडे रखने की बात कहती है। आज निश्चित रूप से गांधीजी द्वारा सुझाई बुनियादी शिक्षा को ठीक उसी प्रकार लागू नही किया जा सकता क्योकि आज हमारे सामाजिक आर्थिक ढांचे में काफी बदलाव आया है किन्तु बुनियादी शिक्षा का जो मूल स्वरूप (विचार) है वह आज और भी प्रासंगिक हो गया है। नई तालीम सिर्फ औपचारिक शिक्षा नही है। यह तो गर्भाधान से आरंभ होकर मृत्यु पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। यह जीवन की शिक्षा है। जो जीवन पर्यन्त – आजीवन चलती रहती है। यह जीवन की हर एक क्रिया–प्रक्रिया वैज्ञानिक तरीके से जीवन पोषक स्वरूप में कलात्मकता सिखाती है। नई तालीम का असली मकसद है एक नया समाज सर्वोदयी समाज का निर्माण। यह कोई वर्ग विशेष जाति विशेष धर्म विशेष या देश विशेष के लिए काम करना नही चाहती। यह तो पूरी मानव जाति और प्रकृति का सर्वदेशीय विकास करने का लक्ष्य रखती है। इसका माध्यम न सिर्फ उद्योग है। इसका माध्यम तो पूरा जीवन है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- डॉ0 शिवदत्त (2012) "बुनियादी शिक्षा की अवधारणा राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।
- सोनी, दयाल चंद जी (2008) "बुनियादी शिक्षाः एक नई कोशिश" विद्याभवन सोसायटी उदयपुर एवं गुजरात विद्यापीठ, आश्रम रोड, अहमदाबाद द्वारा संयुक्त रूप से प्रकाशित।
- राष्ट्रीय नई तालीम सम्मेलन, (2004) के कार्य विवरण मे उल्लेखित।
- गांधी, एम0के0 (2002) (एस0पी0 रूहेला – संग्राहक) "शिक्षा पर गांधीवादी विचारः 21वी सदी में उनकी प्रासंगिकता" इडियन पब्लिशर्स इंस्टीटयूट नई दिल्ली।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

- सिंह,एस0 (2000) "महात्मा गांधी एवं डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन" पी0एच0डी0, शोध शिक्षा संकाय, बनारसः हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस।
- रोमा, रोला (1976) "महात्मा गांधी : जीवन और दर्शन," लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद।
- कृपलानी, आचार्य जे0बी0 (1970) "महात्मा गांधी हिज लाइफ एंड थॉट" भारत सरकार पब्लिकेशन नई दिल्ली।
- गांधी, एम0के0 (1962) "Ture Education," नवजीवन पब्लिशिंग हाऊस अहमदाबाद।
- जे0 बी0 कृपलानी (1957) "द लेटेस्ट फेड बेसिक एजुकेशन" वर्धा हिन्दुस्तानी तालीम संघ।
- पटेल, डॉ0 एम0एस0 (1956) "द एजुकेशनल फिलोसॉफी ऑफ महात्मा गांधी" नवजीवन पब्लिशिंग हाउस अहमदाबाद।
- गांधी, एम0के0 (1956) "(भारत कुमारत्या संग्राहक) नई तालीम की ओर" नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद।
- गांधी, एम0के0 (1947) "मेरे सपनो का भारत," सर्व–सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी।
- गांधी, एम0के0 (1927) "आत्मकथा, सत्य के साथ मेरे प्रयोग," सस्ता साहित्य मण्डल नई दिल्ली।